नवाचार, प्रतिभा और समग्रता

* सुप्रिया अग्रवाल

शोध सारांश

सामाजिक नीति में दिशा निर्देश, सिद्धान्त, कानून और गतिविधियां शमिल है जो मानव कलयाण के लिए अनुकुल परिस्थितियों को प्रभावित करती है जैसे कि व्यक्ति का जीवन स्तर। मानव कल्याण में नीतियों, सा. सेवा कार्यक्रमों के प्रशासन, सार्वजनिक स्वास्थ्य, आवास, आय रख रखाव, शिक्षा व सा. कार्य शामिल है।

यह बुढापे, गरीबी, विकलांगता आदि सभी से संबंधित है। अपने नागरिकों के कल्याण पर सामाजिक नियंत्रण का पूरा मुद्दा जटिल है और आज के समाजों के प्रकार के रूप में विविध है। सामाजिक नीति को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि वह कल्याण पर क्या विचार करती है और अपने प्रशासन के लिए दिशा निर्देश और सिद्धान्त होने के साथ साथ आज प्रशासन को वाजिट करने वाली चीजों को नियंत्रित करने के तरीके कैसे प्रदान करती है।

सा. नीति निर्माण की प्रक्रिया

1. समताओं और अवसरों को पहचान करना
2. मुद्दों को परिभाषित करना और प्राथमिकता देना
3. सार्वजनिक एजेन्डों पर मुद्दों को रखना
4. लक्ष्यों और उद्देश्यों को परिभाषित करना और वैकल्पिक दृष्टिकोणों की पहचान करना।
5. वैकल्पिक तरीकों का मूल्यांकन करना
6. विकल्पों का चयन करना

सुशासन के अंतर्गत बहुत सी चीजे आती है जिसमें अच्छा बजट, सही प्रबन्धन, कानून का शासन व सदाचार है। सुशासन व्यक्ति को भ्रष्टाचार व लालफीताशाही से मुक्त कर प्रशासन को स्मार्ट, साधारण, नैतिक, उत्तरदायी, जिम्मेदारी योग्य व पारदर्शी बनाता है इसकी प्रमुख विशेषताएँः–

1. विधि का शासन
2. समानता व समावेशन
3. भागीदारी
4. अनुक्रियता
5. बहुमत/मैटम्य
6. प्रभावशीलता दक्षता
7. पारदर्शिता
8. उत्तरदायित्व
9. निष्पक्ष आकलन

वस्तुतः वह शासन को जनता की अपेक्षा पर खरा उतरता हो, प्रशासन माना जाता है। रिचर्ड जेफरिज के अनुसार ''यह ऐसा उद्देशोन्मुख और विकासोन्मुख प्रशासन है जो जनता के जीवन स्तर में सुधार हेतु प्रतिबद्ध हो''

सुशासन व सामाजिक नीतियों की सम्पूर्ण अवधारणा निरन्तर प्रशासनिक दुधारों पर बल देती है और इस हेतु सरकार व समाज की संयुक्त भागीदारी को अनिवार्य मानती है। चार्ल्स बेयर्ड–'सभ्य समाज और स्वयं सभ्यता का भविष्य हमारी इस क्षमता पर निर्भर करेगा कि हम प्रशासन को एक ऐसे विज्ञान, दर्शन व व्यवहार के रूप में विकसित कर पाते है या नहीं जो कि सभ्य समाज के कार्यों को पूरा करने में समर्थ हो। वस्तुतः सुशासन का उद्देश्य मानवीय समाज की समस्याओं का समुचित समाधान करना व उन्हें मूल्यों द्वारा मर्यादित करना है तभी समग्र विकास के नवीन मार्ग खोजे जा सकते है।

समावेशी विकास का आशय आर्थिक विकास की ऐसी अवधारणा से है जिसमें विकास का लाभ समाज के सभी लोगों को समान रूप से प्राप्त हो, कोई भी वर्ग विकास से वंचित न रह जाए अर्थात समान अवसरों के साथ–साथ विकास करना ही समावेशी विकास है। भारत सरकार ने 11 वीं पंचवर्षीय योजना में समावेशी विकास का व्यापक रूप से प्रयोग किया, विकास प्रक्रिया को समावेशी बनाने हेतु क्षेत्रीय, सामाजिक व आर्थिक विषमताओं को दूर करने हेतु प्रभावी व संपोषणीय नीतियां व कार्यक्रम बनाना एक चुनौतिपूर्ण कार्य अतः 12वीं पंचवर्षीय योजना (2012–2017) की अवधारणा का केन्द्र बिन्दु तीव्र, धारणीय व अधिक समावेशी विकास रखा गया।

योजना का मुख्य उद्देश्य मानव विकास तथा व्यक्तियों के द्वारा जीवन यापन के उच्चतम स्तर को प्राप्त करना होता है। गरीब हाशिये पर रह रहे लोगों के विकास पर बल बेहतर रहन सहन का वातावरण तथा अवसरों का अधिकतम समान वितरण करने की आवश्यकता आदि है। महिलाओं को केन्द्र में रखकर उनके सशक्तिकरण पर बल देते हुए उनकी शिक्षा व रोजगार की ओर ध्यान देना आवश्यक है। जनसंख्या का बडा हिस्सा विशेषकर भूमिहीन कृषि श्रमिक, सीमांत कृषक, अनुसूचित जातिया, अनुसूचित जनजातिया, घूमन्तु जातिया और अन्य पिछडे वर्ग के लोग सामाजिक व वित्तिय समस्याओं तथा अपवर्जन से जूझ रहे है। समावेशी विकास में आर्थिक विकास की ऊँची वृद्धि पर से प्राप्त लाभ के समान वितरण को शामिल किया जाता है।

वस्तुतः समावेशी विकास में कृषि का उद्योग व सेवा क्षेत्र आदि सभी का योगदान है और वस्तुतः कृषि का, उद्योग व सेवा क्षेत्र अध्यापन हम अर्थशास्त्र में करते है, इसी तरह समावेशी विकास बिना राज्य या समाज या सरकार के अध्ययन के संभव नहीं है तभी हम सामाजिक व राजनैतिक समस्याओं का पता लगा सकते है। जिसके लिए राजनैतिक विज्ञान व समाज शास्त्र का अध्ययन आवश्यक है बिना इतिहास की पूर्व धारणाओं की जानकारी के तथा बिना भौगोलिक जानकारी के भी किसी क्षेत्र के विकास का पता लगाना असंभव है अतः भूगोल व इतिहास का अध्ययन भी समावेशी विकास हेतु आवश्यक है। समावेशी विकास में सा., रा., आ. सांस्कृतिक व शैक्षिक सभी पहलूओं को सम्मिलित किया गया है। सतत् विकास लक्ष्य के वैश्विक लक्ष्यों में गरीबी खत्म करना, पर्यावरण की रक्षा, आर्थिक असमानता को कम करना और सभी के लिए शान्ति और न्याय शामिल है।

सतत् विकास के लक्ष्य

- गरीबी को पूर्ण समाप्ति
- भुखमरी को समाप्ति
- अच्छा स्वास्थ्य और जीवन स्तर
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
- लैंगिक समानता

- साफ पानी, स्वच्छता
- सस्ती, स्वच्छ ऊर्जा
- अच्छा काम, आर्थिक विकास
- उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचे का विकास
- असमानता में कमी
- टिकाऊ शहरी और सामुदायिक विकास
- जिम्मेदारी के साथ उपयोग और उत्पादन
- जलवायु परिवर्तन
- पानी, भूमि पर जीवन
- शांति व न्याय के लिए संस्थान
- लक्ष्य प्राप्ति में सामूहिक साझेदारी

मानव सभ्यता के आरंभ में जब जनसंख्या कम थी, लोग सीधा जीवन व्यतीत करते थे व प्रकृति के निकट सम्पर्क में रहते थे तब मनुष्य अपने उपयोग के लिए प्रकृति से जो तत्व (O_2, N_2, C_2) निकलता था वो पुनः प्राकृतिक चक्र के माध्यम से प्रकृति में पहुंच जाता था, उन दिनों प्राकृतिक संसाधनों का भंडार विकास व खपत मामूली थी, परन्तु समय के साथ जनसंख्या व मनुष्य के उपयोग का स्तर बढता गया, धीरे धीरे उनके भंडार में कमी की समस्या उत्पन्न हो गई अब मनुष्य न केवल प्रकृति से दूर बल्कि प्रकृति को दूषित भी करने लग गया। राजनीति में इसका प्रत्युत्तर पर्यावरणवाद के रूप में सामने आया।

पर्यावरणवाद के आरंभिक संकेत ई0एफ0 शूमेकर की चर्चित कृति Smile is beautiful (लघुता से सुन्दरता है) के अंतर्गत मिलते है लेखक ने कहा– धरती और इसके अपूरणीय संसाधनों की ऐसी पूंजी समझने की भूल नहीं करनी चाहिए जिसका हम सृजन और व्यय या निवेश करते है। बहुत सारे प्राकृतिक संसाधनों का सृजन नहीं किया जा सकता, उन्हें बढाना असंभव है।

पर्यावरणवाद के समर्थक यह तर्क देते है कि धरती किसी की निजी सम्पत्ति नही है, यह हमें अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार में नही मिली, यह मारे पास भावी पीढियों की धरोहर है, अतः पर्यावरण की रक्षा के लिए सजग होना हमारा परम कर्त्तव्य है। आर्थिक विकास की अंधी दौड़ में हमारे पर्यावरण को अत्यन्त क्षति पहुंची है। खनिज पदार्थों की खोज में अंधाधुंध खनन के कारण इतनग अम्ल बहाए गए है जिन्होंने निर्मल जल स्त्रोंतों को बहाल कर दिया है। जंगलों और पहाडों की कटाई से इतना भू–क्षरण हुआ है जिससे भूमि की उर्वरता नष्ट होती जा रही है। दूर–दूर तक फैले कारखानों की चिमनियों और दिन–रात धुंआ उगलती मोटर गाडियों में इतना वायु प्रदूषण पैदा किया है कि जिससे मनुष्य, जीव जन्तुओं और पेड पौधों के स्वास्थ्य को अपार क्षति हुई है।

इन सब तथ्यों की ओर ध्यान खींचते हुए पर्यावरणवाद जीवन की गुणवत्ता को आर्थिक सवृद्धि से ऊंचा स्थान देता है और प्राकृतिक संसाधनों, प्राकृति सौन्दर्य, वातावरण की स्वच्छता व नगरों तथा उपनगरों के स्वरूप को कायम रखने पर बल देता है।

वस्तुतः धरती एक जीवित सखी के तुल्य है, यदि यह जीवित रहेगी तो मनुष्य भी जीवित रहेगा यदि मनुष्य की कार्यवाही से प्राकृतिक जगत को क्षति पहुंचेगी तो मानव जीवन दूभर हो जाएगा।

पर्यावरणवाद के समर्थक दो सिद्धांतों पर बल देते है

1. मनुष्य और प्रकृति के टूटे संबंध को फिर से जोडना जरूरी है।
2. मनुष्यों के सामाजिक व राजनैतिक जीवन को नए रूप में ढालना जरूरी है।

यह विचार सतत् विकास के रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

पर्यावरणवादी मानते है कि आज के औधोगिक जगत में ये विशेषताएं पाई जाती हैः–

आर्थिक संवृद्धि, केन्द्रीकरण, अधिकारितंत्रीकरण और भौतिकवाद

उत्तर औधोगिक समाज के लिए ये विशेषताएं अपनानी होगीः–

स्वावलंबनीयता, छोटी–छोटी वस्तुओं और संगठनों के गुणों की पहचान, जनसंख्या नियंत्रण, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व, आध्यात्मिक पुनर्याग्रति और फिर से प्रकृति के साथ जीने की अभिलाषा

उद्योगपति अपने निजी लाभ के लिए जो माल बनाकर बाजार में डाल देते है उसके प्रति ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए उनके मन में तुच्छ और कृत्रिम इच्छाओं को उल्लेखित करते है इन इच्छाओं की संतुष्टि को उल्लेखित करते है इन इच्छाओं की संतुष्टि अपव्ययपूर्ण उपयोग को बढावा देती है। इन्हें रोकने के लिए पर्यावरणवादी सतत विकास, अनवरत विकास या अक्षय विकास का आदर्श हमारे सम्मुख रखते है इसे स्वावलंबनपूर्ण विकास भी कहा जाता है।

सतत विकास की संकल्पना विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग की देन है। (1987) इसमें मांग की गई थी कि वर्तमान पीढी को अपनी आवश्यकताएं इस ढंग से पूरी करनी चाहिए कि भावी पीढियां अपनी आवश्यकताएं पूरी करने में असमर्थ न हो जाएं। इस सन्दर्भ में महात्मा गांधी का शरीर श्रम का सिद्धांत सर्वथा प्रासंगिक है। इसमें यह शिक्षा दी जाती है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने शरीर से इतना श्रम अवश्य करना चाहिए जिससे वह अपनी दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं का उत्पादन स्वयं कर सके।

सतत विकास की धारणा से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि आर्थिक संवृद्धि के लिए पर्यावरण को क्षति पहुंचाना अनिवार्य हो जाए तो पर्यावरण की रक्षा के हित में आर्थिक संवृद्धि का बलिदान कर देना चाहिए।

अमरीका के लोग विश्व की जनसंख्या का 6 प्रतिशत हिस्सा है, परन्तु वे सम्पूर्ण विश्व में निर्मित माल के करीब करीब आधे और सम्पूर्ण विश्व की तिहाई ऊर्जा की खपत के लिए जिम्मेदार है। पर्यावरवादियों का सुझाव है कि उन्नत देश के लोगों को निजी वाहनों का प्रयोग कम करके सार्वजनिक परिवहन और साईकिलों के प्रयोग को बढावा देना चाहिए, मांस मछली की जगह हरी सब्जियों व दालों के प्रयोग की ओर बढना चाहिए। कोयले बिजली और न्यूक्लीय ऊर्जा की जगह पवन ऊर्जा और सौर ऊर्जा के प्रयोग को बढावा देना चाहिए। पर्यावरणवाद सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण को अपना लक्ष्य मानता है।

मानव जाति को निकट विनाश से बचाने के लिए पर्यावरणवादी चाहते है कि वर्तमान भीनकाय स्तर की उत्पादन प्रणाली की जगह मानवीय स्तर की उत्पादन प्रणाली स्थापित करनी चाहिए।

कला मात्र सौन्दर्य–लिप्सा और कौतूहल वृद्धि का साधन नहीं है, वरन वह जीवन को संस्कार और समाज सत्ता के लिए भी आवश्यक है। कला जीवन के आंतरिक सौन्दर्य का अभिव्यंजन करती है। समाज अपने लिए जैसे चरित्र, शक्ति और साधन अपनाता है उसी के अनुरूप कला निर्माण आवश्यक है।

साहित्य भी समाज का प्रतिबिम्ब है

''अंधकार है वहां, जहां आदत्य नहीं है।
अंधा है वह देश, जहां साहित्य नही है।
''साहित्य संगीत कला विहिन, साक्षात पशु–पुच्छ विषाणहीन''

साहित्य समाज को नूतन दिशा व गति प्रदान कर महानता का परिचय देता है, यह किसी भी समाज का हू बहू प्रतिबिम्ब न होकर एक प्रेरक चित्र है। दूरर्शन अधिकतर साहित्यिक रचनाओं का आधार बनाकर धारावाहिक, टेलीफिल्मों आदि का निर्माण करता है। दुनिया भर की क्रांतियों व घटनाओं के पीछे वहां के साहित्य में उपलब्ध चेतना की चिन्गारी का बडा भारी योगदान रहा है। समाज को नीति, आदर्श व सदाचार की शिक्षा देने के लिए साहित्य व कला से बडा कोई स्कूल नही होता। शिक्षा के नवाचार व समग्रता इनके बिना संभव नही है। वस्तुतः समाज और राष्ट्र की समस्या व बुराईयों के विरूद्ध साहित्य व कला ही आवाज उठाते है।

साहित्य व कला की समाज के मंगल का विधान है। साहित्य व कला की जीवन व समाज के सत्य शिव व सुन्दर का महाकुम्भ है जिनके ह्रदय की पुस्तकें घुल चुकी होती है, उसे अन्य किसी पुस्तक की आवश्यकता नही रहती। ऐसे सृजनशील मानव की बेहतर, नवीन व समग्र विकसित समाज की दिशा में अग्रसर हो सकते है।

***शोधार्थी,**
विभाग राजनीति विज्ञान
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर (राज.)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जनश्रुति संस्कृत श्लोक
2. अभिव्यक्ति और माध्यम, पेज न 109, सृजनात्मक लेखन, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
3. वर्मा देशराज, हिन्दी साहित्य संवेदना व सरोकार, पृ0 159, साहित्य और समाज, राज. पल्लिशिंग हाउस, जयपुर
4. ओमप्रकाश गाबा, राजनीति सिद्धांत की रूप रेखा, पृष्ट 427, नेशनल पल्लिशिंग हाउस
5. इन्टरनेट स्त्रोत
6. https://hi.m.wikipedia.org>wiki
7. https://www.hindilibraryindia.com
8. https://casi.sas.upenn.edu>hindi>lit
9. https:// www.drishtiias.com>I
10. https:// en.m.wikipedia.org>wiki